Date: - 26/05 /2020.
Day: - Tusday, Time: - 10:30 to 11:20.
Class:- B.Ed. session (2019 21) 1st year. Subject: - contemporary India and Education. Paper:-2 Topic:-

रूसो (ROUSSEAU)

JEAN – JACQUES ROUSSEAU का जन्म 1712 ईस्वी में जेनेवा में हुआ था। उनके पिता एक घड़ीसाज थे। उनकी जन्म के बाद ही उनकी माता का देहांत हो गया था। अतः उनकी चाची ने उनका पालन पोषण किया। उनके पिता ने उनकी ओर बहुत कम ध्यान दिया 6 वर्ष की अवस्था में ही वह उपन्यास पढ़ने लगे थे। जिसने उनकी मूल-प्रवृत्तियों एवं आत्म अभिव्यक्ति की भावना को उद्दीप्त किया। रूसो को विद्यालय की शिक्षा अपनी ओर आकर्षित ना कर सकी क्योंकि उस समय की विद्यालय की शिक्षा में कठोरता बहुत अधिक थी। इसके अतिरिक्त विद्यालय में अनुशासन की स्थापना हेतु कठोर दंड दिया जाता था। इन परिस्थितियों में रूसो के शैक्षिक विचारों पर बहुत प्रभाव पड़ा निरउद्देश्य और आवारागर्दी का जीवन व्यतीत करने के कारण समाज ने रूसो पर झूठे आरोप लगाए जिससे वह क्षुब्ध होकर वह फ्रांस चले गए वहां जाकर बीमार पड़ गए। इसी बीमारी ने उनकी साहित्यिक अध्ययन की ओर रुचि बढ़ा दी। उन्होने प्लेटो , हाप्स आदि के ग्रंथों का अध्ययन किया तथा स्वयं भी लेखक बनने का प्रयास किया। 1750 ईस्वी में लेखन प्रारंभ किया। उनकी मृत्यु 1778 ईसवी में फ्रांस में हुई।
उनके मरने के 15 वर्ष पश्चात उन्हें महान व्यक्ति तथा क्रांतिकारी होने का गौरव प्राप्त हुआ।

रूसो की प्रमुख रचनाएं :

1. एमिल (1762)
2. सोशल कॉन्ट्रैक्ट (1762)
3. दी प्रॉमिस ऑफ आर्ट एंड साइंस (1750)
4. सोशल इनिक्वालिटी (1754)
5. दी न्यू हेलॉयज (1761)

रूसो के शैक्षिक विचार :

1. रूसो ने तत्कालिक शिक्षा की आलोचना करते हुए उसे कृत्रिम बताया था।
2. उसने शिक्षा में सुधार के लिए प्राकृतिक सिद्धांतों एवं विचारों का प्रतिपादन किया था।

3. वह बालक को ऐसी शिक्षा देने के पक्षपाती थे जो उसके मस्तिष्क, शरीर और मन को स्वतंत्रता प्रदान करें एवं स्वतंत्र रूप से उसका विकास करें।

शिक्षा का अर्थ :

रूसो एक प्रकृतिवादी विचारक थे और उनकी शिक्षा निषेधात्मक थी। वह 12 वर्ष की आयु तक के बालक को औपचारिक शिक्षा देने के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने बालक को शिक्षा प्रक्रिया का मुख्य अंग बताया। शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करते हुए रूसो ने लिखा है ***" सच्ची शिक्षा वह है जो व्यक्ति के अंदर से प्रस्फुटित होती है यह उसकी अपनी अंतर्निहित शक्तियों की अभिव्यक्ति है "***
निषेधात्मक शिक्षा का अर्थ चिरकाल निष्क्रियता नहीं है वरन इससे भिन्न है। यह सद्गुण नहीं देती यह दुर्गुणों से दूर रखती है। यह सत्य को प्रकट नहीं करती। यह त्रुटि से बचाती है। यह बालक को उस मार्ग की ओर उन्मुख करती है जो उसे सत्य की ओर ले जाएगा।

शिक्षा के उद्देश्य :

रूसो के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

1. जीवन में पूर्णता।
2. मौलिक एवं स्वभाविक शक्तियों का विकास।
3. मौलिक उद्देश्य
4. व्यवहारिक ज्ञान की प्राप्ति
5. मस्तिष्क तथा संवेगो का विकास।

पाठ्यक्रम :

रूसो ने मानव जीवन को चार अवस्थाओं में बांटा है। पाठ्यक्रम निर्धारण में इन चारों अवस्थाओं को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम प्रस्तावित किया गया है:

1. **1. 1 से 5 वर्षकीशिक्षा:** यह मानव जीवन की प्रथम अवस्था है जिसे शैशवावस्था कहा जाता है। रूसो के अनुसार इस अवस्था में बच्चों को प्रतिबंधों से मुक्त रखना चाहिए। शारीरिक शिक्षा बौद्धिक एवं नैतिकता पर थोड़ा ध्यान देना चाहिए।

2. **2. 5 से 12 वर्षतककीशिक्षा :** यह जीवन का अत्यधिक विषम काल होता हैं। रूसो के अनुसार बच्चों के मस्तिष्क में कुछ भरने के बजाय उन्हें अनुभव द्वारा सीखने देना चाहिए। इस अवस्था में बच्चों में प्रकृति की तरफ रुचि बढ़ानी चाहिए और प्राकृतिक रुचि के माध्यम से बौद्धिक प्रशिक्षण देना चाहिए।

3. **3. 12 से 15 वर्ष तक की शिक्षा:** यह जीवन का वह काल है जिसमें बालक की शारीरिक ऊर्जा उसकी आवश्यकता से अधिक होती है। बालक की इंद्रियां एवं शरीर पुष्ट हो जाता है। रूसो के अनुसार सीखने की उत्सुकता अथवा रुचि एकमात्र पथ-प्रदर्शक का कार्य करती है।

4. **4. <u>15 से 20 वर्ष की शिक्षा:</u>** यह काल बच्चों में नैतिक शिक्षा देने का है। रूचि के अनुसार इस अवस्था में बालक की शरीर की इंद्रियां एवं मस्तिष्क का निर्माण हो चुका होता है। रुसो ने इस अवस्था के पाठ्यक्रम में संगीत तथा कामशास्त्र को भी स्थान दिया है।

शिक्षण विधि :

1. करके सीखना
2. निरीक्षण द्वारा सीखना
3. अन्वेषण द्वारा सीखना
4. स्वानुमान द्वारा सीखना
5. प्रयोग द्वारा सीखना

<u>अनुशासन :</u> रूसो बालक की स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं और उस पर किसी भी प्रकार का वह नियंत्रण नहीं चाहते। उन्होंने प्राकृतिक परिणामों द्वारा अनुशासन के सिद्धांतों के बारे में बताया और उनका मानना था कि प्राकृतिक परिणामों द्वारा ही अनुशासन के सिद्धांतों में विश्वास जागृत किया जा सकता है।

<u>शिक्षक तथा शिक्षार्थी :</u> रूसो ने शिक्षा प्रक्रिया में बालकों को प्रमुख तथा शिक्षक को गौड़ स्थान दिया है। रूसो ने प्रकृति को ही बालक का सच्चा शिक्षक माना है। शिक्षक का कार्य केवल इतना होना चाहिए कि वह बालक के स्वाभाविक विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करें।

<u>विद्यालय :</u> रूसो के अनुसार विद्यालय एक कृत्रिम कठोर अनुशासन वाली संस्था है बल्कि विद्यालय ऐसे होने चाहिए जिसमें बालक के विकास के लिए उचित वातावरण प्राप्त हो सके। बालक को स्वतंत्र वातावरण दिया जाना चाहिए।

<u>भारतीय दर्शन तथा पाश्चात्य दर्शन में अंतर :</u>

<u>पाश्चात्य दर्शन :</u>

पश्चिमी विचारकों की विचारधारा के अनुसार दर्शन का जन्म आश्चर्य और संदेश से होता है। अगर इसे और भी अच्छे से कहा जाए तो प्लेटो ने कहा था कि दर्शन का जन्म आश्चर्य से होता है। इससे विपरीत ने कहा था कि दर्शन का जन्म संदेश होता है।अब सच्चाई क्या है। इस विषय पर प्रोफेसर पैट्रिक कहते हैं। प्राचीन काल में दर्शन का जन्म आश्चर्य से हुआ था। किंतु वर्तमान समय में दर्शन का जन्म संशय से होता हैं।
इसका कारण यह है कि आधुनिक युग में संदेह मानव के लिए रोम-रोम में बस चुका है। एक प्रसिद्ध प्रवक्ता ने अपने भाषण में कुछ शब्द कहे थे।जो कि इस तरह थे। ऐसा समय कहीं नहीं रहा जबकि इतने अधिक लोग इतने अधिक विषयों के बारे में अध्ययन करने के बाद इतने अधिक संदेह में रहे हो जितना कि वर्तमान युग में है। आज का शिक्षित मानव जीवन प्रकृति, ब्रह्मांड, ईश्वर और धर्म के विषय में भी संदेह मानता है बल्कि साइंस या विज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित इसकी भी बुनियादी मान्यता पर संदेह बना रहता है।

भारतीय दर्शन : भारतीय विचारधारा के अनुसार दर्शन का जन्म मानव के सांसारिक दुखों से मुक्त करने के लिए और सत्य का साक्षात्कार कराने के लिए हुआ है। जब व्यक्ति को सत्य का बोध हो जाता है तब वह और अविनाशी में अंतर समझ लेता है। जब से यह दुनिया शुरू हुई है तभी से मानव सिर्फ प्रकृति, ब्राह्मण , सूर्य, तारे केवल इन्ही को लेकर ही नहीं बल्कि ईश्वर को लेकर भी समस्या में पड़ा हुआ है। उसने ईश्वर को जानने की भी जिज्ञासा नहीं रखी है। आज हम इतनी विकसित दुनिया में रह रहे हैं यह उसी जिज्ञासाओं का परिणाम है लेकिन जो हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि थे उन्हें इस सांसारिक सुख से संतुष्टि नहीं हुई वह एक असीम आनंद को प्राप्त करना चाहते थे। उन्होंने सत्य की खोज के लिए सूक्ष्म से सूक्ष्म बातो का गूढ़ से गूढ़ अध्ययन किया और सिर्फ बाहरी रूप से ही नहीं बल्कि आंतरिक रूप से भी और वह इसमें सफल भी हुए और फिर उन्हें परम सत्य का भी ज्ञान हुआ। उसी ज्ञान को उन्होंने दर्शन का नाम दिया और यही ***INDIAN PHILOSOPHY***(भारतीय दर्शन) कहलाती है। इसलिए आज भी देखने को मिलता है कि भारत के दार्शनिक विज्ञान को केवल हासिल ही नहीं करना चाहते बल्कि उसको उपयोग में भी लाना चाहते हैं। उनकी अनुभूति को भी प्राप्त करना चाहते हैं जबकि पश्चिम के दार्शनिक बुद्धिमान और प्रज्ञावान बनना चाहते हैं। पश्चिम के दार्शनिक में किताबी ज्ञान और चिंतन के आधार पर ही बुद्धिमान बनना चाहते हैं लेकिन भारतीय दार्शनिक अंतः स्वअध्ययन से ही बुद्धिमान होना चाहते हैं। और इसी व्यवस्था को आगे की ओर ले जाना चाहते हैं।

भारतीय दर्शन और पश्चिमी दर्शन में अंतर

क्रम	भारतीय दर्शन	पश्चिमी दर्शन
1.	भारतीय दर्शन को अध्यात्मिक दर्शन और तत्व दर्शन कहा जाता है।	पश्चिमी दर्शन को सैद्धांतिक दर्शन और वैज्ञानिक दर्शन भी कहा जाता है।
2.	चेतना की मीमांसा का होना अनिवार्य हैI इसलिए भारतीय दर्शन आंतरिक है।	इसमें चेतना का होना जरूरी नहीं है इसलिए यह बाहरी है।
3.	यहजीवन के अंतिम लक्ष्य तक पहुंचाना चाहता है।	यह सीखने और सिखाने की महत्वता पर बल देता है।